IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत कलाकारों का फिल्म संगीत में योगदान

**डॉ. वंदना, विद्यालय अध्यापक, बिभूतिपुर, समस्तीपुर, बिहार**

**सारांश -** फिल्मों का उद्देश्य जन सामान्य का मनोरंजन करना तो होता ही है साथ में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक अनेक प्रकार की समस्याओं को उजागर कर उनका समाधान भी प्रस्तुत करना होता है। भारत में गत 90 वर्षों से फिल्मों का निर्माण हो रहा है। फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने में जहां संवादों का महत्व है वही संगीत का भी अपना एक अलग स्थान है। संगीत के माध्यम से अनेक प्रकार की भावनाओं को व्यक्त किया जा सकता है। 'नाट्य शास्त्र' में भरत मुनि ने स्पष्ट रूप से बताया है की नाटक का मुख्य उद्देश्य रस की उत्पत्ति है अर्थात जब कोई व्यक्ति नाटक देखता है तब वह उन परिस्थितियों से अपने आप को जोड़कर देखता है और उनसे समाधान प्राप्त करता है। भारतीय फ़िल्म जगत केवल मुंबई में बनने वाली फिल्मों से ही संबंधित नहीं है अपितु दक्षिण भारतीय फिल्म जगत, बंगाली फिल्म जगत, उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल तथा पंजाबी फिल्म जगत सभी जगह अपनी-अपनी भाषाओं में फिल्म का निर्माण किया जा रहा है अतः वहां की संस्कृति का दर्शन फिल्मों के माध्यम से होता है, अतः इन फिल्मों को देखकर भारत के प्रत्येक प्रदेश का व्यक्ति अन्य प्रदेशों की संस्कृति एवं सभ्यता से भी परिचित होता है।

**संकेताक्षर-** गायक, शिव-हरि, सितार , शहनाई , तबला , सारंगी

**शोध विधि -** प्रस्तुत शोध-पत्र कार्य को पूरा करने के लिए उपलब्ध एवं प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। इस विधा से जुड़े विद्वान संगीतज्ञों से संपर्क स्थापित कर शोध की सामग्री एकत्रित की गई है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, इंटरनेट एवं निम्नलिखित स्रोतों से भी शोध विषयक सामग्री प्राप्त कर शोध-पत्र को प्रमाणिक बनाने का प्रयास किया गया है।

1. पुस्तक एवं पत्रिकाएं 2.डिजिटल मीडिया 3.निरीक्षण तकनीक 4.शोध-पत्र

**प्रस्तावना -** जब फिल्मों का निर्माण प्रारंभ हुआ था तब शास्त्रीय संगीतकार ही फिल्म संगीत की रचना करते थे और प्रत्येक फिल्मी संगीतकार किसी न किसी संगीत के घराने का शिष्य हुआ करता था। बनारस घराने के ठुमरी गायकों में प्रसिद्ध मौजुद्दीन खान साहब की परंपरा में गौहर जान, मल्लिका जान, जानकी बाई, इलाहाबाद वाली जोहराबाई, बनारस की बड़ी मोतीबाई, रसूलन बाई, काशीबाई, विद्याधरी बाई आदि थी। प्रसिद्ध अभिनेत्री नरगिस की माताजी जद्दन बाई ने ग्वालियर के भैया गणपत राव जी से हारमोनियम वादन की शिक्षा प्राप्त की थी। जद्दन बाई स्वयं भी बहुत अच्छी गायिका थी जो कि बाद में फिल्मों में संगीत निर्देशक और अभिनेत्री के रूप में कार्य करती रही। उनके साथ हारमोनियम वादक आमिर साहब थे जो सोहराब मोदी की पुकार फिल्म के संगीत निर्देशक बने।

विभिन्न गायन शैलियों जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी तथा लोकगीतों के विभिन्न प्रकार फिल्मों में प्रस्तुत किए जाते हैं, जिससे फिल्म देखने वाला व्यक्ति इन गायन शैलियों से भी परिचित होता है एवं इन गायन शैलियों की समानता एवं भिन्नता का भी ज्ञान प्राप्त करता है। इसी प्रकार विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों जैसे भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी और कुचीपुड़ी जैसे शास्त्रीय नृत्यों के साथ-साथ भांगड़ा, गिद्दा, बिहू, रास, चरकुला आदि लोक नृत्यों को भी फिल्मों में दिखाया जाता है।

**संगीत कलाकार एवं फिल्म जगत-** कर्नाटक संगीत की सर्वश्रेष्ठ गायिका भारत रत्न श्रीमती एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी ने 1938 ईस्वी में प्रेमचंद जी की रचना पर आधारित सेवा सदन फिल्म में कार्य किया तथा 1947 में फिल्म मीरा के सभी भजनों का गायन किया तथा मीरा के रूप में आपका कार्य भी बहुत पसंद किया गया। किराना घराने की गायिका रोशन आरा बेगम ने हिंदी, उर्दू और पंजाबी भाषाओं

की चार फिल्मों में काम किया। आपने संगीतकार अनिल विश्वास, तसदुक हुसैन और फिरोज निजामी के संगीत निर्देशन में कई फ़िल्मों के लिए गीत भी गाए, जिनमें 1945 में बनी फ़िल्म पहली नजर, 1947 में जुगनू, 1957 में क़िस्मत, 1960 में रूपमती बाज बहादुर और 1969 में बनी फ़िल्म नीला पर्वत प्रमुख हैं।

भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी के गायन को सभी संगीत विश्लेषकों ने बहुत सराहा था। आपने अनेक हिंदी व कन्नड़ फिल्मों के लिए भी गायन किया 1985 ईस्वी में अनकही फिल्म के लिए आपको सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायन का पुरस्कार प्रदान किया गया। किराना घराने के संस्थापक उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब के पुत्र सुरेश बाबू माने ने प्रभात फिल्म द्वारा निर्मित अमृत मंथन, चंद्रसेन राजपूत रमानी जैसी अनेक फिल्मों में कार्य किया तथा अनेक फिल्मों में संगीत रचना भी की। आपकी बहन सरस्वती राणे ने 'वीणा मधुर मधुर कछु बोल' हिंदी फिल्म 'राम राज्य' का यह गीत ग्रामोफोन रिकार्ड की सर्वाधिक बिक्री करने के लिए एच.एम.वी. द्वारा पुरस्कृत किया गया था। श्याम बेनेगल की फिल्म सरगम और भूमिका के लिए पार्श्व गायन कर आपने प्रसिद्धि प्राप्त की। आपने महान संगीत निर्देशकों जैसे सी. रामचंद्र, शंकर राव व्यास, के. सी. डे एवं सुधीर फडके के निर्देशन में भी गायन किया था।

किराना घराने के वरिष्ठ कलाकार पंडित फिरोज दस्तूर ने बाल कलाकार के रूप में लाल-ए-यमन फिल्म में गीतों का गायन स्वयं किया था। खून-ए- नाहक, आत्मतरंग, रिटर्न ऑफ तूफान मेल, बाग-ए-मिसर नामक फिल्मों में आपने कार्य किया था। 1941 से लेकर 2006 तक आपने अपनी कलात्मक प्रतिभा का परिचय संसार को दिया। 1930 के कालखंड से ही पंडित फिरोज दस्तूर को 1500 रुपए का वेतन प्रति माह प्राप्त होता था इससे पता चलता है कि आपके द्वारा किए जा रहे कार्य स्तरीय होते थे। जे. बी. एच. भाटिया जी इसलिए भी अधिक पसंद करते थे क्योंकि आप अभिनय के साथ-साथ अपने गाने स्वयं गा सकते थे। यह ऐसा दौर था जब फिल्मों में पार्श्व गायन का प्रचार नहीं था, अभिनेता और अभिनेत्रियां स्वयं ही अपने गाने गाते थे। श्रीमती शोभा गुर्टू जी ने मराठी और हिंदी सिनेमा के लिए अनेक गीतों का गायन किया है। 1972 में पाक़ीज़ा फिल्म का गीत बंधन बांधे और 1973 में फागुन फिल्म का गीत मोरे सैयां बेदर्दी बन गए तथा 1978 में आई पिक्चर मैं तुलसी तेरे आंगन की में सैयां रूठ गए आदि गाकर अपने प्रशंसकों की प्रशंसा प्राप्त की।

महाराष्ट्र में उस्ताद अल्लादिया खान, पंडित विष्णु दिगंबर पर उसका उस्ताद अब्दुल करीम खान, उस्ताद अमान अली खान आदि से घराने दर शिक्षा प्राप्त किए हुए संगीत निर्देशक गोविंद राव प्रोफेसर बी आर देवघर, कृष्ण राव, केशव राव भोला आदि ने फिल्म संगीत में निर्देशक का कार्य अत्यंत परिश्रम से किया। इन सभी संगीत निर्देशकों की रचनाएं मुख्यतः शास्त्रीय संगीत पर आधारित होती थी 1931 से लेकर 1941 तक इस प्रकार फिल्म संगीत में घराने की गायकी पर आधारित संगीत फिल्मी संगीत का प्रयोग किया जाता रहा। मल्लिकार्जुन मंसूर चंद्रहास फिल्म के संगीत निर्देशक थे जो किराना घराने के एवं जयपुर घराने के शास्त्रीय संगीत कलाकार थे। पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी के शिष्यों में से एक शंकर राव व्यास प्रसिद्ध फ़िल्म संगीत निर्देशक हुए जिन्होंने राम राज्य में संगीत निर्देशन किया था।

कथक नृत्यांगना श्रीमती सितारा देवी ने उषा हरण जैसी धार्मिक फिल्मों के साथ-साथ रोटी, हलचल, फुल धीरज होली, औरत का दिल, नगीना, वतन आदि फिल्मों में भी अपने नृत्य संगीत से लोगों का मनोरंजन किया। सितारा देवी ने फ़िल्म अभिनेत्री माला सिन्हा, रेखा, मधुबाला तथा काजल को भी कथक नृत्य की शिक्षा प्रदान की थी।

कथक नृत्य सम्राट पद्म विभूषण पंडित बिरजू महाराज का भी बॉलीवुड से गहरा नाता रहा है उन्होंने कई हिंदी फिल्मों में गीतों का नृत्य निर्देशन किया इनमें सत्यजीत राय की प्रख्यात शास्त्रीय फिल्म शतरंज के खिलाड़ी भी शामिल है। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता निर्देशक यश चोपड़ा की दिल तो पागल है, ग़दर एक प्रेम कथा तथा संजय लीला भंसाली की फिल्म देवदास का नाम इन फिल्मों में प्रमुखता से लिया जा सकता है। 2016 में फिल्म बाजीराव मस्तानी में नृत्य निर्देशन के लिए आपको फिल्म फेयर अवार्ड भी प्रदान किया गया था।

प्रसिद्ध उपशास्त्रीय गायिका गजल क्वीन कहीं जाने वाली श्रीमती बेगम अख्तर ने बहुत सी फिल्मों में कार्य किया जिनमें से 1933 ईस्वी में किंग फॉर ए डे, 1934 ईस्वी में मुमताज बेगम, अमीना, रूप कुमारी, 1935 ईस्वी में जवानी का नशा, 1936 ईस्वी में नसीब का चक्कर, 1940 ईस्वी में अनार वाला और 1958 ईस्वी में जलसा घर फिल्मों में कार्य किया। सन 1942 में अपने प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक महबूब खान की फिल्म रोटी में अभिनय किया था। इसका संगीत प्रसिद्ध संगीत निर्देशक अनिल विश्वास ने दिया था। इस फिल्म में आपने अपनी सभी गजलें स्वयं ही गाई थीं।

किराना घराने के उस्ताद अब्दुल करीम खान की शिष्या मोघू बाई की पुत्री गान हीरा किशोरी अमोनकर एवं श्री रघुनान पनशीकर द्वारा मराठी भाषा में लालित्य पूर्ण गायन से युक्त मराठी भजन कानडा विट्ठल विटेवरी नामें बरवा हृदयी ध्यावा, बोलावा विठ्ठल पहावा विठ्ठल, अवधा रंग एक झाला रंगी रंगला श्री रंग हैं। आपने अनेक फिल्मों में शास्त्रीय संगीत की बंदिशें गाई हैं। 1990 में हिंदी फिल्म दृष्टि के लिए आपने गीत गाया। पत्थरों ने फिल्म का टाइटल सॉन्ग 1964 ईस्वी में वी. शांताराम द्वारा निर्देशित गीत गाया पत्थरों ने फिल्म का प्रसिद्ध गीत पंख होते तो उड़ आती रे गाया। इस फिल्म में संगीत दिया था संगीतकार रामलाल जी ने। आपके द्वारा गाया इस फ़िल्म का एक और गीत तकदीर का फसाना जाकर किसे सुनाएं बहुत प्रसिद्ध हुआ था।

भारत रत्न से विभूषित पंडित रविशंकर ने प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक सत्यजीत रे की फिल्म अप्पू त्रई, पारस पत्थर, काबुलीवाला, चेतन आनंद की नीचा नगर और के. अब्बास की फिल्म धरती के लाल में संगीत निर्देशन किया था। आंधियां फिल्म में पार्श्व संगीत के लिए उस्ताद अली अकबर खान का सरोद, पंडित रविशंकर का सितार और पंडित पन्नालाल घोष की बांसुरी का भी उपयोग किया गया था। पंडित रविशंकर ने अनुराधा और गोदान फिल्मों में मोहम्मद रफ़ी और लता मंगेशकर द्वारा गाए हुए गीतों में संगीत निर्देशन किया था।

पंडित हरिप्रसाद चौरसिया एवं पंडित शिवकुमार शर्मा ने शिव-हरि की जोड़ी के नाम से सिलसिला, लम्हे, चांदनी आदि फिल्मों में अपूर्व संगीत प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए संगीत निर्देशन किया तथा अनेक राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार भी प्राप्त किए। हरिप्रसाद चौरसिया ने प्रसिद्ध संगीतकार भुवन के साथ मिलकर '27 डाउन' तथा उड़िया फिल्म 'समया' ( 1976), 1981 में छुपा छुपी फिल्म में अनुराधा पौडवाल द्वारा गाए गीत 'लो शुरू हो गया' का संगीत दिया था। प्रसिद्ध संतूर वादक शिवकुमार शर्मा ने झनक झनक पायल बाजे, कश्मीर की कली, बरसात की रात, हम दोनों, यह रात फिर ना आएगी आदि यादगार फिल्मों में संतूर वाद्य का अविस्मरणीय संगीत दिया है।

राग नट भैरवी, भैरवी, पहाड़ी, राजस्थानी लोक संगीत पर आधारित यह संगीत श्रोताओं ने बहुत पसंद किया। पटियाला घराने की प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत गायिका परवीन सुल्ताना द्वारा गाया गीत ग़दर- एक प्रेम कथा में आन मिलो सजना, अंखियों में ना आए निंदिया तथा 1971 में आशा भोंसले के साथ गाया हुआ पिया की गली, कुदरत फिल्म का 'हमें तुमसे प्यार कितना यह हम नहीं जानते' पाकीजा फिल्म में 'कौन गली गए श्याम' ठुमरी फिल्म 1920 का गीत 'वादा तेरा वादा' तथा अजय चक्रवर्ती के साथ आपकी गाई हुई ठुमरी यादगार बन गई है।

बावर्ची फिल्म में कथक नृत्य कलाकार चौबे महाराज के साथ गाया हुआ श्रीमती लक्ष्मी शंकर का गीत 'काहे कान्हा करत बरजोरी' भी बहुत प्रसिद्ध हुआ था। मुग़ल-इ-आज़म फिल्म में तानसेन के किरदार में उस्ताद बड़े गुलाम अली खान द्वारा गाया हुआ गीत 'प्रेम जोगन बनके' तथा 1959 ईस्वी में बांग्ला फिल्म जलसाघर में बेगम अख्तर के द्वारा गाई पीलू राग की ठुमरी' भर भर आई आंखें' भी दर्शकों ने बहुत पसंद किया। आंधियां फिल्म में उस्ताद अली अकबर खान के संगीत से सुसज्जित श्रीमती लक्ष्मी शंकर के द्वारा गाया हुआ गीत 'घनश्याम के हैं घनश्याम नयन' भी अत्यंत भक्ति पूर्ण है। प्रसिद्ध अभिनेता गोविंदा की माता जी श्रीमती निर्मला देवी उपशास्त्रीय संगीत की प्रसिद्ध गायिका थीं जिन्होंने सवेरा, शारदा, गाली, चालीस करोड़ और जन्माष्टमी आदि फिल्मों में काम भी किया था। आपने मन्ना डे एवं किशोर कुमार के साथ बावर्ची फिल्म में 'भोर आई गया अंधियारा' गीत गाया था।

प्रसिद्ध शहनाई वादक भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने आशुतोष गोवारिकर की हिंदी फिल्म स्वदेश के गीत यह जो देश है तेरा सत्यजीत रे की फिल्म जलसाघर तथा हिंदी फिल्म गूंज उठी शहनाई में संगीत दिया था। महान बांसुरी वादक पन्नालाल घोष बाबा अलाउद्दीन खान के शिष्य थे जो की प्रसिद्ध संगीत निर्देशक हुए। इंदौर घराने से संबंध रखने वाले सितार वादक उस्ताद रईस खान ने दुल्हन एक रात की फ़िल्म के गीत मैंने रंग ली आज चुनरिया, आवारा फिल्म के गीत सजना तेरे रंग में तथा घर आया मेरा परदेसी, अपलम चपलम, राधा ना बोले ना बोले ना बोले रे आदि गीतों में अपने सितार वादन से चार चांद लगा दिए थे। प्रसिद्ध सारंगी वादक उस्ताद सुल्तान खान 1981 में बनी फिल्म उमराव जान के गीत दिल चीज क्या है आप मेरी जान लीजिए, इन आंखों की मस्ती के अफसाने हजारों हैं, जिंदगी जब भी तेरी बाहों में लाती है हमें आदि में अपने दिलकश सारंगी वादन तथा हम दिल दे चुके सनम के गीत अलबेला सजन आयो रे गीत गाकर भी अपने प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

आगरा घराने के प्रसिद्ध गायक पंडित दिलीप चंद्र बेदी के शिष्य भगत राम हुसन लाल दोनों भाइयों की जोड़ी ने अनेक फिल्मों में संगीत निर्देशन किया। भगत राम हारमोनियम बहुत अच्छा बजाते थे एवं हुसन लाल वायलिन वादक थे। आपके बड़े भाई पंडित अमरनाथ भी बहुत अच्छे गायक थे। इन दोनों की जोड़ी ने आज की रात, अमर कहानी, बड़ी बहनें, बालम, प्यार की जीत, आधी रात, मीना बाजार , अफसाना, सनम, काफिला तथा पंजाबी फिल्म में जट्टी पंजाबी दी आदि अनेक फिल्मों में संगीत निर्देशन किया । लगभग 15 वर्षों

तक इस जोड़ी ने अनेक हिट गीत दिए। बनारस घराने के प्रसिद्ध तबला वादक पंडित किशन महाराज ने नीचा नगर, आंधियां, बड़ी मां आदि फिल्मों में तबला वादन किया है। प्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद अल्ला रखा खां ने भी बेवफा और मां-बाप जैसी कुछ फिल्मों के ट्रैक लिखे थे।

बनारस के प्रसिद्ध सारंगी वादक सुरसहाय के पुत्र गोपाल मिश्रा थे जिन्होंने झनक झनक पायल बाजे फिल्म में गोपी कृष्ण व चौबे महाराज के नृत्य एवं सामता प्रसाद के तबले के साथ सभी बंदिशें में सारंगी से सहयोग दिया था। लखनऊ घराने के कालका-बिंदादीन के पुत्र लच्छू महाराज ने फिल्मों में नृत्य निर्देशन किया और कई फिल्म तारिकाओं को कत्थक नृत्य सिखाया। सुखदेव महाराज के शिष्य गोपी कृष्ण, तारा, सितारा, अलकनंदा और चौबे महाराज थे जिन्होंने फिल्मों में अपने नृत्य प्रदर्शन से दर्शकों का मन मोह लिया। फिल्म निर्देशक मधु बोस की पत्नी श्रीमती साधना बोस ने कुमकुम दंडासर और राजनर्तकी जैसी फिल्मों में अभिनय किया था। आप मणिपुरी नृत्य की कलाकार थीं।

फिल्मों में काम करने वाली वैजयंती माला, वहीदा रहमान, हेमा मालिनी, सुधा चंद्रन, जयाप्रदा, श्रीदेवी, कमल हसन, रेखा, आशा पारेख, पद्मिनी व रागिनी एवं मीनाक्षी शेषाद्रि जैसी अनेक नायिकाएं अभिनय के अलावा भरतनाट्यम की पूर्ण रूपेण दक्ष कलाकार थी जिनका कार्य फिल्मों में भी अत्यंत सराहा गया।

शास्त्रीय संगीत को एक नई दिशा देने वाले पंडित विष्णु दिगंबर जी के पुत्र पंडित डी. वी. पलुस्कर तथा अमीर खान साहब का बैजू बावरा फिल्म का एक गीत आज गावत मन मेरो झूम के दर्शकों ने बहुत पसंद किया था। पंडित विष्णु दिगंबर जी के शिष्य प्रोफेसर बी .आर. देवधर जी ने भी अनेक फिल्मों में संगीत निर्देशन किया।

**निष्कर्ष-** यदि फ़िल्म संगीत और शास्त्रीय संगीत का विश्लेषण किया जाए तो यह तथ्य उजागर होता है कि शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत सीखने के उपरांत यदि कोई कलाकार मंच प्रदर्शन करता है तो वह इन्हीं विधाओं के कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है। फिल्म लाइन में जाने के बाद यह आवश्यक नहीं है कि फिल्मों के गीत और नृत्य पूर्णतः शास्त्रीय आधार पर ही बनाए जाएं जिसके कारण कभी-कभी शास्त्रीय रीति से गायन, वादन व नृत्य सीखने के उपरांत उन्हें उस तरह का मिश्रण पसंद नहीं आता और वे बहुत अधिक दिनों तक उस मिश्रित संगीत को अपना नहीं पाते हैं। दूसरी ओर जितने भी प्रसिद्ध गायक, वादक और नर्तक हुए हैं उन सब ने शास्त्रीय संगीत को अनेक वर्षों तक सीखा है उदाहरण के लिए लता मंगेशकर, आशा भोंसले, श्रेया घोषाल, किशोर कुमार, मन्ना डे, सुलक्षणा पंडित, मोहम्मद रफी, नौशाद , एस. डी. बर्मन आदि। इन सभी इन सभी संगीत कलाकारों एवं संगीत निर्देशकों ने भारतीय फ़िल्म जगत को नई ऊंचाई तक पहुंचाया है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची-**

1.निबंध संगीत, संकलक- लक्ष्मी नारायण गर्ग, प्रकाशक- संगीत कार्यालय, हाथरस 204101 उत्तर प्रदेश, चतुर्थ संस्करण- अप्रैल 2012

2.पांचवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक भारतीय संगीत का विकास, मोनिका जैन, आईएसबीएन 978-9 3-84 776- 14-5 वर्ष 2017 नैतिक प्रकाशन, प्लॉट नंबर ए- 64 गली नंबर -1 करन एनक्लेव चिपयाना बुजुर्ग, गौतम बुद्ध नगर- 201009 (उत्तर प्रदेश)

3.बनारसी ठुमरी की परंपरा में ठुमरी गायिकाओं की चुनौतियां, डॉ ज्योति सिन्हा, ISBN 978- 93-82 396- 73-4 द्वारा - भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला 171005 हिमाचल प्रदेश, वर्ष 2019

4.भारत के शास्त्रीय नृत्य नवजागरण और उसके बाद, लीला वेंकट रमन, आईएसबीएन 978-93-86906-85-4 नियोगी बुक, ब्लॉक डी बिल्डिंग नंबर 77 ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज 1 नई दिल्ली 110020 भारत

5.भारतीय संगीत वाद्य, मिश्र लालमणि, प्रकाशक- वाणी प्रकाशन ग्रुप, 4695, 21- ए दरियागंज, नई दिल्ली 1100002 आईएसबीएन 978-9 3-5518-072-8

6.रामपुर सहसवान घराना: हिंदुस्तानी संगीत की एक उत्कृष्ट परंपरा, अविनाश कुमार, आईएसबीएन 978- 93-8477 6-19-0 वर्ष 2020 नैतिक प्रकाशन, प्लॉट नंबर ए- 64 गली नंबर -1 करन एनक्लेव चिपयाना बुजुर्ग, गौतम बुद्ध नगर- 201009 (उत्तर प्रदेश)

7.श्री मल्लक्ष्य संगीतम, गुणवंत व्यास,

8.संगीत साधना, डॉ. रंजना सक्सेना, ज्योति खंडेलवाल, आईएसबीएन 978-9 3-5632- 995-9 बी.एफ.सी. पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमटेड, सी. पी. -61, विराज खंड, गोमती नगर, लखनऊ